

भारतीय इतिहास में जातक कथाओं का महत्व



प्रतिमा कुमारी
पूर्व शोध-छात्रा,
संकाय सामाजिक विज्ञान,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत।

ABSTRACT

भगवान बुद्ध का परिचय — भगवान बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी नामक ग्राम में वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था। इनके पिता का नाम शुद्धोधन और माता का नाम माया था। गौतम बुद्ध का मूल नाम सिद्धार्थ था। बुद्ध के जन्म से पूर्व उनकी माता माया को बड़े ही विचित्र-विचित्र स्वप्न आते थे। जब शुद्धोधन ने भविष्यवक्ताओं से इस प्रकार के स्वप्न का अर्थ पूछा तो उन्होंने बताया कि माया को अद्भुत पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी। यदि यह बालक घर में रहेगा तो चक्रवर्ती सम्राट बनेगा। और यदि गृहत्याग किया तो सन्यासी बन जाएगा और अपने ज्ञान रूपी प्रकाश से समस्त विश्व को आलोकित प्रकाशित करेगा।

पिता ने बुद्ध को चक्रवर्ती सम्राट बनाने के लिए अनेकों प्रत्यन किए, परंतु सिद्धार्थ सदा किसी चिंता में डूबे रहते थे। उनके पिता ने उनका विवाह करा दिया लेकिन फिर भी उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। एक बार सिद्धार्थ रथ पर बैठकर नगर भ्रमण को निकले तो उन्होंने ऐसी कुछ चीजें देखी जिससे उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। उन्होंने एक वृद्ध व्यक्ति, एक रोगी, एक शव को देखा तो वे संसार से और अधिक विरक्त हो गए और अपनी पत्नी तथा पुत्र राहुल को छोड़कर घर से निकल पड़े। गया के निकट वटवृक्ष के नीचे 7 दिन और 7 रात व्यतीत होने के बाद आठवें दिन वैशाख पूर्णिमा को उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और जिस वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ वह आज भी ‘बोधिवृक्ष’ के नाम से प्रसिद्ध है। ज्ञान प्राप्ति के समय उनकी अवस्था 35 वर्ष की थी।

बोधगया से चलकर वे सारनाथ पहुंचे। जहां उन्होंने प्रथम बार 3 शिष्यों को अपना उपदेश दिया। बौद्ध परम्परा में यह उपदेश “धर्म चक्र प्रवर्तन” के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इनके पिता ने इनको कपिलवस्तु बुलाने के लिए अनेक लोगों को भेजा, परंतु जो भी इनके पास जाता, वह इनका ही शिष्य बन जाता था और घूम घूम कर उनके उपदेशों का प्रचार करने लगता था।

इनकी मृत्यु हिरण्यवती नदी के तट पर कुशीनारा में 483 ई.पू. में 80 वर्ष की अवस्था में अतिसार के कारण हो गई। इसे बौद्ध धर्म ‘महापरिनिर्वाण; कहा गया है। बुद्ध ने अपने उपदेश पाली भाषा में दिए हैं।

जातक कथाओं का तात्पर्य –

जातक कथाओं में भगवान बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएं वर्णित हैं। यह जातक कथाएं बौद्ध ग्रंथ पिटक का सुतपिटक अंतर्गत खद्दक निकाय का दसवां भाग है। जातक शब्द “जन्” धातु में “क्त” प्रत्यय जोड़कर बनता है, जिसका अर्थ है – जातभूत कथा अर्थात् जन्म से पूर्व की कथा।

लोगों की मान्यता है कि जातक कथाएं स्वयं भगवान बुद्ध द्वारा कही गई हैं परंतु कुछ विद्वानों का मानना है कि कुछ जातक कथाएं गौतम बुद्ध के निर्वाण के बाद उनके शिष्यों द्वारा कही गई हैं। विश्व की प्राचीनतम लिखित कहानियाँ जातक कथाएं हैं जिसमें लगभग 600 कहानियों का संग्रह है। इन कथाओं में मनोरंजन के माध्यम से नीति और धर्म को समझाने का प्रयास किया गया है।

जातक कथाओं का रूप लोक साहित्य का है। इसमें पशु पक्षियों इत्यादि की कथाएं भी हैं और मनुष्य की भी हैं। विण्टरनित्ज ने मुख्यतः 7 भागों में जातकोंकथानक को वर्णित किया है –

- 1) व्यवहारिक नीति संबंधी कथाएं
- 2) पशुओं की कथाएं
- 3) हास्य और विनोद से परिपूर्ण कथाएँ
- 4) रोमांचकारी लंबी कथाएँ
- 5) नैतिक वर्णन

- 6) कथन मात्र
- 7) धार्मिक कथाएँ।

इन कथाओं के वर्णन की शैलियां भी विभिन्न प्रकार की हैं— कहीं गद्यात्मक वर्णन है तो कहीं आख्यान के रूप में। कहीं किसी विषय पर कथित वचनों का संग्रह है तो कहीं महाकाव्य, खण्डकाव्य के रूप में वर्णन है।

भारतीय इतिहास में जातक कथाओं का महत्व –

भारतीय इतिहास में जातक कथाओं का विशेष महत्व है। बुद्धकालीन भारत के समाज, धर्म, राजनीति, भूगोल, लौकिक विश्वास, आर्थिक, सामाजिक, संपूर्ण जीवन की पूरी सामग्री जातक कथाओं में प्राप्त होती है। जातक कथाओं का सिर्फ भारतीय इतिहास में ही नहीं बल्कि समग्र विश्व साहित्य के इतिहास में जातक का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय इतिहास में जातक के स्थान को कोई दूसरा ग्रंथ नहीं ले सकता। बुद्ध कालीन भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन को जानने के लिए जातक एक उत्तम साधन है।

जातक की निदान कथा में हम तत्कालीन भारतीय भूगोल संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। तक्षशिला में शिक्षा के विधान पाठ्यक्रम, अध्ययन विषय उनके व्यवहारिक और सैद्धांतिक पक्ष, निवास, भोजन आदि के विषय में पूरी जानकारी हमें जातकों से मिलती है। वाराणसी, राजगृह मिथिला, उज्जयिनी, श्रावस्ती, कौशाम्बी आदि प्रसिद्ध नगरों को मिलाने वाले मार्ग, स्थानीय व्यापार का पूरा विवरण हमें जातकों में मिलता है।

जल के मार्ग का भी जातको में स्पष्ट उल्लेख है। जिस समय का जातक में चित्रण है उसमें वर्ण व्यवरथा प्रचलित थी। ब्राह्मणों को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। ब्राह्मण और क्षत्रिय ये दो वर्ण ऊँचे माने जाते थे, दासों की प्रथा प्रचलित थी। जातक कहानियों से पता चलता है कि किसी भी समय एक पेशे को छोड़कर कोई व्यक्ति दूसरा पेशा कर सकता था। उनके शिष्यों का समाज में आदर था। वेश्याओं में प्रभूत वर्णन जातक में मिलते हैं। जातक कथाओं से ही हमें पता चलता है कि उस समय लोग धार्मिक थे। यक्षों, वृक्षों, नागों, नदियों की पूजा की जाती थी। रामायण और महाभारत के अतिरिक्त

पतंजलि के महाभाष्य में भी जातक गाथाएं उल्लिखित हैं। प्राचीन शास्त्र एवं साहित्य एवं बाद के कथा साहित्य पर इसका प्रभाव उपलक्षित है।

उपसंहार –

निष्कर्ष के रूप से कह सकते हैं कि भारतीय साहित्य में जातक कथाओं का विशेष महत्व है। बौद्ध धर्म के सभी सम्प्रदाय में जातक का महत्व प्रतिष्ठित है। यह एक प्रकार से महायान और हीनयान को जोड़ने वाली कड़ी है। इन कथाओं में मनोरंजन के माध्यम से नीति और धर्म को समझाने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार यह कहना उचित होगा कि जातक कथाओं में महात्मा बुद्ध द्वारा कही गई ऐसी कथाएं हैं जो व्यक्ति को नैतिकता, सत्य, धर्म, प्रेम, भाईचारे का संदेश देती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- 1) बुद्ध कालीन भारतीय भूगोल भरत सिंह उपाध्याय
- 2) बुद्धकालीन समाज एवं धर्म मदनमोहन सिंह (हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1972, बिहार)
- 3) प्राचीन भारत का इतिहास रोमिला थापर (नई दिल्ली)
- 4) बौद्ध साहित्य में भारतीय समाज परमानन्द सिंह (वाराणसी, 1996)
- 5) प्राचीन भारतीय संस्कृति वीरेन्द्र कुमार सिंह (अभयवन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011)
- 6) जातक कथाएँ डॉ. मदन आनन्द कौशल्यायन
- 7) जाते कथा—माला रामचन्द्र वर्मा (वाराणसी)
- 8) बुद्ध और बौद्ध धर्मचतुर्शन शास्त्री (1996, लखनऊ)